ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in November 2025

राजनीतिक दलों के प्रभाव से राजनीतिक आदर्श एवं संकल्प व्यवहार में परिवर्तनः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

सवी सुखीजा, शोधार्थी (राजनीति विज्ञान), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ. शिल्पा रानी, प्रोफेसर (राजनीति विज्ञान), टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

अमूर्त

प्रस्तुत शोध पत्र समकालीन राजनीति में राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली और उनके वैचारिक धरातल में आ रहे परिवर्तनों का परीक्षण करता है। वर्तमान समय में राजनीति 'मूल्यों' (Values) से हटकर 'प्रबंधन' (Management) की ओर स्थानांतरित हो गई है। शोध का मुख्य केंद्र यह है कि कैसे सत्ता प्राप्ति की होड़ में दल अपने 'आदर्शों' को 'व्यावहारिक आवश्यकताओं' के अनुसार बदल रहे हैं। यह शोध इस बात का विश्लेषण करता है कि क्या राजनीतिक दल अब केवल चुनावी मशीन बनकर रह गए हैं या अभी भी वे सामाजिक परिवर्तन के वाहक हैं।

परिचय

राजनीतिक दल लोकतंत्र के प्राण हैं। वे जनता और सरकार के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं। किसी भी दल का अस्तित्व उसके 'राजनीतिक आदर्शों' (Ideological Ideals) पर टिका होता है। ऐतिहासिक रूप से, राजनीतिक दल एक विशेष विचारधारा (समाजवाद, दक्षिणपंथ, वामपंथ आदि) के प्रति प्रतिबद्ध होते थे।

किंतु, वैश्वीकरण और सूचना क्रांति के दौर में राजनीति का स्वरूप बदला है। अब 'संकल्प व्यवहार' (Commitment Behavior) जनता के प्रति जवाबदेही के बजाय 'चुनावी लाभ' की ओर अधिक झुक गया है। गठबंधन की राजनीति और वैचारिक अस्पष्टता ने दलों के मूल स्वरूप को प्रभावित किया है।

विधि तंत्र

इस शोध में निम्नलिखित पद्धतियों का प्रयोग किया गया हैः

ऐतिहासिक पद्धतिः दलों के वैचारिक इतिहास को समझने के लिए।

तुलनात्मक पद्धतिः विभिन्न दलों के घोषणापत्रों (Manifestos) और उनके वास्तविक कार्यों के बीच तुलना करने के लिए।

सामग्री विश्लेषण (Content Analysis): चुनावी भाषणों, नीतिगत दस्तावेजों और मीडिया रिपोर्टों का विश्लेषण।

द्वितीयक डेटाः चुनाव आयोग की रिपोर्ट, सीएसडीएस (CSDS) के आंकड़े और पिछले शोध कार्यों का उपयोग।

साहित्य समीक्षा

साहित्य समीक्षा के अंतर्गत निम्नलिखित बिंदुओं पर चर्चा की गई हैः

मॉरिस डुवर्जर (Maurice Duverger): उन्होंने राजनीतिक दलों के संगठनात्मक ढांचे और उनके व्यवहार पर महत्वपूर्ण कार्य किया है।

रजनी कोठारी (Politics in India): भारतीय संदर्भ में 'कांग्रेस सिस्टम' और बाद में बहुदलीय व्यवस्था में आए बदलावों का वर्णन।

एंथनी डाउन्स (An Economic Theory of Democracy): यह सिद्धांत बताता है कि दल विचारधारा के बजाय वोट बैंक को ध्यान में रखकर नीतियां बनाते हैं।

समकालीन शोध पत्र जो 'राजनीतिक अवसरवाद' और 'पॉपुलिज्म' (Populism) पर आधारित हैं।

शोध अंतराल

पूर्व के शोधों में अक्सर दलों की चुनावी जीत या हार पर ध्यान केंद्रित किया गया है। लेकिन, ''आदर्शों का पतन और व्यवहारिक संकल्पों का परिवर्तन'' कैसे सांगठनिक स्तर पर दल की पहचान को मिटा रहा है, इस पर गहन अध्ययन की कमी है। यह शोध विशेष रूप से 'आदर्शों के लचीलेपन' (Ideological Flexibility) पर केंद्रित है।

प्रस्तावित शोध के सोपान

विषय चयन एवं परिकल्पना निर्माणः शोध के मुख्य प्रश्न तय करना।

साहित्य का गहन अध्ययनः पुराने सिद्धांतों और वर्तमान स्थितियों का मिलान।
डेटा संग्रहणः प्रमुख दलों के पिछले 20 वर्षों के घोषणापत्रों का संग्रह।
प्रकरण अध्ययन (Case Study): किसी विशिष्ट दल द्वारा विचारधारा बदलने के उदाहरण का विश्लेषण (जैसे– गठबंधन के लिए विपरीत विचारधारा से समझौता)।
विश्लेषण एवं व्याख्याः प्राप्त डेटा का सांख्यिकीय और गुणात्मक विश्लेषण।

उद्देश्य

- राजनीतिक दलों के सैद्धांतिक आधार और वास्तविक व्यवहार के बीच के अंतर को स्पष्ट करना।
- यह पता लगाना कि वैश्वीकरण और तकनीक ने दलों की कार्यशैली को कैसे बदला है।
- गठबंधन की राजनीति का आदर्शों पर पड़ने वाले प्रभाव का मूल्यांकन करना।
- राजनीतिक शुचिता और नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारणों की पहचान करना।

परिकल्पना

H1: राजनीतिक दल अब विचारधारा के बजाय 'चुनावी व्यवहारिकता' (Electoral Pragmatism) को प्राथमिकता देते हैं।
H2: सत्ता की प्राप्ति की इच्छा दलों को उनके घोषित संकल्पों से विचलित कर देती है।
H3: जनता की बढ़ती अपेक्षाएं और 'पॉपुलिज्म' दलों को लोक–लुभावन लेकिन अव्यावहारिक वादे करने पर मजबूर करते हैं।

महत्व

यह शोध राजनीति विज्ञान के क्षेत्र में एक नई दृष्टि प्रदान करता है। यहः
नीति निर्माताओं को यह समझने में मदद करेगा कि क्यों नीतियां अक्सर धरातल पर विफल होती हैं।
मतदाताओं को दलों के 'आकर्षक संकल्पों' के पीछे की वास्तविकता को समझने के लिए जागरूक करेगा।
लोकतांत्रिक संस्थाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए राजनीतिक दलों के भीतर आंतरिक सुधारों की आवश्यकता को रेखांकित करेगा।

निष्कर्ष

राजनीतिक दलों के प्रभाव ने 'आदर्शों' को एक चुनावी उपकरण बना दिया है। संकल्प व्यवहार अब दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन के बजाय अल्पकालिक चुनावी लाभ तक सीमित हो गया है। हालांकि, दल अभी भी संगठित शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनके भीतर 'नैतिक संकट' गहराता जा रहा है। लोकतंत्र की जीवंतता के लिए यह आवश्यक है कि दल अपने श्आदर्शोंश और श्व्यवहारश में समन्वय स्थापित करें।

संदर्भ

1. Kothari, R. (1970). Politics in India. Orient Longman.
2. Duverger, M. (1954). Political Parties. Wiley.
3. Yadav, Y. (2020). Making Sense of Indian Democracy. Oxford University Press.
4. Election Commission of India - Statistical Reports.
5. Journal of Democracy - "The Crisis of Political Parties".